इकाई - IV

18. साँस–साँस में बाँस (उपवाचक पाठ)

एक जादूगर थे चंगकीचंगलनबा। अपने जीवन में उन्होंने कई बड़े-बड़े करतब दिखलाए। जब मरने को हुए तो लोगों से बोले, "मुझे दफ़नाए जाने के छठे दिन मेरी कब्र खोदकर देखोगे तो कुछ नया-सा पाओगे।"

कहा जाता है कि मौत के छठे दिन उनकी कब्र खोदी गई और उसमें से निकले बाँस की टोकरियों के कई सारे डिज़ाइन। लोगों ने उन्हें देखा, पहले उनकी नकल की और फिर नए डिज़ाइन भी बनाए।

बाँस भारत के विभिन्न हिस्सों में बहुतायत में होता है। भारत के उत्तर-पूर्वी क्षेत्र के सातों राज्यों में बाँस बहुत उगता है। इसलिए वहाँ बाँस की चीज़ें बनाने का चलन भी खूब है। सभी समुदायों के भरण-पोषण में इसका बहुत हाथ है। यहाँ हम खासतौर पर देश के उत्तरी-पूर्वी राज्य नागालैंड की बात करेंगे। नागालैंड के निवासियों में बाँस की चीज़ें बनाने का खूब प्रचलन है।

इंसान ने जब हाथ से कलात्मक चीज़ें बनानी शुरू कीं, बाँस की चीज़ें तभी से बन रही हैं। आवश्यकता के अनुसार इसमें बदलाव हुए हैं और अब भी हो रहे हैं।

कहते हैं कि बाँस की बुनाई का रिश्ता उस दौर से है, जब इंसान भोजन इकट्ठा करता था। शायद भोजन इकट्ठा करने के लिए ही उसने ऐसी डलियानुमा चीज़ें बनाई होंगी। क्या पता बया जैसी किसी चिड़िया के घोंसले से टोकरी के आकार और बुनावट की तरकीब हाथ लगी हो!

बाँस से केवल टोकरियाँ ही नहीं बनतीं। बाँस की खपच्चियों से ढेर चीज़ें बनाई जाती हैं, जैसे–तरह-तरह की चटाइयाँ, टोपियाँ, टोकरियाँ, बरतन, बैलगाड़ियाँ, फ़र्नीचर, सजावटी सामान, जाल, मकान, पुल और खिलौने भी।

असम में ऐसे ही एक जाल, जकाई से मछली पकड़ते हैं। छोटी मछलियों को पकड़ने के लिए इसे पानी की सतह पर रखा जाता है या फिर धीरे-धीरे चलते हुए खींचा जाता है। बाँस की खपच्चियों को इस तरह बाँधा जाता है कि वे एक शंकु का आकार ले लें। इस शंकु का ऊपरी सिरा अंडाकार होता है। निचले नुकीले सिरे पर खपच्चियाँ एक-दूसरे में गुँथी हुई होती हैं।

खपच्चियों से तरह-तरह की टोपियाँ भी बनाई जाती हैं। असम के चाय बागानों के चित्रों में तुम्हें लोग ऐसी टोपियाँ पहने दिख जाएँगे और हाँ उनकी पीठ पर टँगी बाँस की बड़ी-सी टोकरी देखना न भूलना।

जुलाई से अक्टूबर, घनघोर बारिश के महीने! यानी लोगों के पास बहुत सारा खाली वक्त या कहो आसपास के जंगलों से बाँस इकट्ठा करने का सही वक्त। आमतौर पर वे एक से तीन साल की उम्र वाले बाँस काटते हैं। बूढ़े बाँस सख्त होते हैं और टूट भी तो जाते हैं। बाँस से शाखाएँ और पत्तियाँ अलग कर दी जाती हैं। इसके बाद ऐसे बाँसों को चुना जाता है जिनमें गाँठें दूर-दूर होती हैं। दाओ यानी चौड़े, चाँद जैसी फाल वाले चाकू से इन्हें छीलकर खपच्चियाँ तैयार की जाती हैं। खपच्चियों

की लंबाई पहले से ही तय कर ली जाती है। मसलन, आसन जैसी छोटी चीज़ें बनाने के लिए बाँस को हरेक गठान से काटा जाता है। लेकिन टोकरी बनाने के लिए हो सकता है कि दो या तीन या चार गठानों वाली लंबी खपच्चियाँ काटी जाएँ। यानी कहाँ से काटा जाएगा यह टोकरी की लंबाई पर निर्भर करता है।

आमतौर पर खपच्चियों की चौड़ाई एक इंच से ज़्यादा नहीं होती है। चौड़ी खपच्चियाँ किसी काम की नहीं होतीं। इन्हें चीरकर पतली खपच्चियाँ बनाई जाती हैं। पतली खपच्चियाँ लचीली होती हैं। खपच्चियाँ चीरना उस्तादी का काम है। हाथों की कलाकारी के बिना खपच्चियों की मोटाई बराबर बनाए रखना आसान नहीं। इस हुनर को पाने में काफ़ी समय लगता है।

टोकरी बनाने से पहले खपच्चियों को चिकना बनाना बहुत ज़रूरी है। यहाँ फिर दाओ काम आता है। खपच्ची बाएँ हाथ में होती है और दाओ दाएँ हाथ में। दाओ का धारदार सिरा खपच्ची को दबाए रहता है जबकि तर्जनी दाओ के एकदम नीचे होती है। इस स्थिति में बाएँ हाथ से खपच्ची को बाहर की ओर खींचा जाता है। इस दौरान दायाँ अँगूठा दाओ को अंदर की ओर दबाता है और दाओ खपच्ची पर दबाव बनाते हुए घिसाई करता है। जब तक खपच्ची एकदम चिकनी नहीं हो जाती, यह प्रक्रिया दोहराई जाती है। इसके बाद होती है खपच्चियों की रंगाई। इसके लिए ज़्यादातर गुड़हल, इमली की पत्तियों आदि का उपयोग किया जाता है। काले रंग के लिए उन्हें आम की छाल में लपेटकर कुछ दिनों के लिए मिट्टी में दबाकर रखा जाता है।

बाँस की बुनाई वैसे ही होती है जैसे कोई और बुनाई। पहले खपच्चियों को चित्र में दिखाए गए तरीके से आड़ा-तिरछा रखा जाता है। फिर बाने को बारी-बारी से ताने के ऊपर-नीचे किया जाता है। इससे चैक का डिज़ाइन बनता है। पलंग की निवाड़ की बुनाई की तरह।

टुइल बुनना हो तो हरेक बाना दो या तीन तानों के ऊपर और नीचे से जाता है। इससे कई सारे डिज़ाइन बनाए जा सकते हैं।

टोकरी के सिरे पर खपच्चियों को या तो चोटी की तरह गूँथ लिया जाता है या फिर कटे सिरों को नीचे की ओर मोड़कर फँसा दिया जाता है और हमारी टोकरी तैयार! चाहो तो बेचो या घर पर ही काम में ले लो।

❑ *एलेक्स एम. जॉर्ज*

(अनुवाद–शशि सबलोक)

प्रश्न

1. बाँस को बूढ़ा कब कहा जा सकता है? बूढ़े बाँस में कौन सी विशेषता होती है जो युवा बाँस में नहीं पाई जाती?
2. बाँस से बनाई जाने वाली चीज़ों में सबसे आश्चर्यजनक चीज़ तुम्हें कौन सी लगी और क्यों?
3. बाँस की बुनाई मानव के इतिहास में कब आरंभ हुई होगी?
4. बाँस के विभिन्न उपयोगों से संबंधित जानकारी देश के किस भू-भाग के संदर्भ में दी गई है? एटलस में देखो।

© NCERT not to be republished

शब्दकोश

यहाँ तुम्हारे लिए एक छोटा-सा शब्दकोश दिया गया है। इस शब्दकोश में वे शब्द हैं जो विभिन्न पाठों में आए हैं और तुम्हारे लिए नए हो सकते हैं। किसी-किसी शब्द के कई अर्थ भी हो सकते हैं। पाठ के संदर्भ से जोड़कर तुम यह अनुमान खुद लगाओ कि कौन सा अर्थ ठीक है।

तुम देखोगे कि शब्द के अर्थ से पहले विभिन्न प्रकार के अक्षर-संकेत दिए गए हैं। इन संकेतों से हमें शब्दों की व्याकरण संबंधी जानकारी मिलती है। नीचे दी गई सूची की मदद से तुम इन अक्षर-संकेतों को समझ सकते हो–

अ.	–	अव्यय	अ.क्रि.	–	अकर्मक क्रिया
क्रि.	–	क्रिया	क्रि.वि.	–	क्रिया विशेषण
पु.	–	पुल्लिग	मु.	–	मुहावरा
वि.	–	विशेषण	स्त्री.	–	स्त्रीलिंग
सं.	–	संज्ञा	स.क्रि.	–	सकर्मक क्रिया

अंट-शंट [वि.पु.]-फ़ालतू या बेकार (की चीज़)
अंचल [पु.]-साड़ी, ओढ़नी आदि जैसे कपड़ों का किनारे का हिस्सा, आँचल
अडिग [वि.]-स्थिर, न डोलने वाला
अनादिकाल [वि.]-जो सदा से चला आ रहा हो
अनुकरण [सं.पु.]-नकल, किसी की देखा-देखी करना
अबूझ [वि.]-जिसे बूझा या समझा न जा सके, अनबूझ
अभिराम [वि.]-सुंदर, मोहक
अवलोकन [सं.पु.]-बारीकी से देखना, जाँचना-परखना
आगंतुक [वि.]-आनेवाला
ऑलिव ऑयल [सं.]-जैतून का तेल
आस्तीन [स्त्री.]-कुर्ते, कमीज़ जैसे सिले हुए कपड़े की बाँह
आह्लादकर [पु.]-खुशी देनेवाला
आह्वान [पु.]-बुलावा, आमंत्रण, पुकार
उकेरना [स.क्रि.]-खोदकर उठाना
उद्दाम [वि.]-बंधन रहित, बहुत ज़्यादा
उष्णता [सं.]-गरमी
ओजस्वी [वि.]-ओजभरा, प्रभावपूर्ण, शक्तिशाली
कंटक [पु.]-काँटा
कतरा [पु.]-बूँद
कनी [स्त्री.]-बूँदें, कण
कमतर [वि.]-कम महत्त्वपूर्ण, कम करके आँकना
करताल [पु.]-एक प्रकार का वाद्य-यंत्र
कल [स्त्री.]-चैन
काढ़ना [स.क्रि.]-निकालना
काम आना [मु.]-युद्ध में मारा जाना, शहीद होना
कारकुन [वि.]-कारिंदा, काम करने वाला
कालगति [स्त्री.]-मृत्यु
कार्निस [सं.] दीवार की कँगनी
कित [अ.]-कहाँ
कृत्रिम [वि.]-बनावटी
केतिक [वि.]-कितना
कैस्टर ऑयल [सं.]-अरंडी का तेल
कोरस [वि.[-एक साथ मिलकर गाना
कौपीनधारी [पु.]-धोती पहनने के एक विशेष ढंग के कारण यह विशेषण गांधी जी के लिए प्रयोग में लाया जाता था, लँगोटी धारण करनेवाला
खपच्ची [स्त्री.]- बाँस की तीली
खलना [अ.क्रि.]-अखरना
खाक [स्त्री.]-धूल, मिट्टी, राख
खाखरा [पु.]-एक गुजराती व्यंजन
खाट [पु.]-चारपाई
खिचड़ी [स्त्री.]-मिला-जुला
खीझना [अ.क्रि.]-झुँझलाना, क्रुद्ध होना
गरबीली [वि.]-गर्व करने वाली
गरारा [पु.अ.]-ढीली मोहरी का पाजामा
गलतफ़हमी [स्त्री.]-गलत समझना
गलीचा [पु.]-सूत या ऊन के धागे से बुना हुआ कालीन
गात [पु.]-शरीर
गाथा [स्त्री.]-कहानी
गिर्द [अ.]-आसपास
गुलज़ार [वि.]-खिले हुए फूलों से भरा हुआ, फुलवारी
गोकि [वि.]-हालाँकि, यद्यपि
गोट [स्त्री.]-सुंदरता के लिए कपड़े पर लगाई जाने वाली पट्टी, फुलकारी, मगज़ी
घरीक [अ.]-घड़ीभर, क्षणभर
घात [वि.]-छल, चाल
चंद [वि.]-कुछ
चटक [पु.]-रंग की शोखी / भड़कीला / चटकीला
च्वै-आँसू बह चले
चबेना [पु.]-चबाकर खाने वाली खाद्य सामग्री
चाँदनी [स्त्री.]-चंदोवा, ऊपर से ताना गया कपड़ा
चारु [वि.]-सुंदर

© NCERT not to be republished

चिथड़े [पु.]-फटा-पुराना कपड़ा, गूदड़
चुनिंदा [वि.]-चुना हुआ
चुन्नट [स्त्री.]-सिलवट
छबीली [वि.]-सुंदर
छरहरा [वि.]-चुस्त, फुर्तीला
जमघट [पु.]-एक जगह इकट्ठे लोगों की भीड़, जमाव
ज़र्रा [पु.अ.]-कण
जानि [स्त्री.सं.]-जानकर
जुंडी [स्त्री.सं.]-जौ और बाजरे की बालियाँ
झलकीं [स्त्री.]-दिखाई दीं
झाँझ [स्त्री.]-काँसे की दो तश्तरियों से बना हुआ वाद्य-यंत्र
टरकाना [स.क्रि.]-खिसका देना, टाल देना
टीपना [स.क्रि.]-हू-ब-हू उतारना, नकल करके लिखना
ठाढ़े [वि.]-खड़े
डग [पु.]-कदम
तश्तरी [स्त्री.]-थालीनुमा प्लेट
तिय [स्त्री.]-पत्नी
तिहाकर [स.क्रि.]-तह लगाकर
दए [क्रि.]-रखना, धरना
दरख्वास्त [सं.स्त्री]-निवेदन, अर्ज़ी
दरिया [सं.पु.]-नदी
दामन [सं.पु.]-पहाड़ के नीचे की ज़मीन
दिव्य [वि.]-बढ़िया, भव्य
द्योतक [वि.]-सूचक
द्वंद्व [सं.पु.]-संघर्ष
द्वै [वि.]-दो
धरि **रखकर**
धीर **खवि.,-धैर्य, धीरज**
नाह [पु.]- पति, स्वामी
निकसी [स्त्री.क्रि.]-निकली
निपात [वि.]-गिरना, पतन
नियामत [स्त्री.]-ईश्वर की देन
निष्फल [वि.]-जिसका कोई फल न हो।
निस्पृह [वि.]-इच्छा रहित
पंखा [पु.]-हाथ से झलनेवाला पंखा, बेना
पखारैं [स.क्रि.]-धोना
पगडंडी [स्त्री.]-खेत या मैदान में पैदल चलनेवालों के लिए बना पतला रास्ता
पर्नकुटी [स्त्री.]-पत्तों की बनी छाजन वाली कुटिया
परिखौ [स.क्रि.]-प्रतीक्षा करना, परखना
पसेउ [पु.]-पसीना
पुट [पु.]-होंठ
पुर [वि.]-नगर, किला
पेचीदा [वि.]-उलझनवाला, कठिन, टेढ़ा
प्रकोप [पु.]-बीमारी का बढ़ना, बहुत अधिक या बढ़ा हुआ कोप
प्रतिदान [पु.]-किसी ली हुई वस्तु के बदले दूसरी वस्तु देना
प्रागैतिहासिक मानव [वि.]-इतिहास में वर्णित काल के पूर्व का मानव
पोंछि-पोंछकर
फ़िरंगी [पु.]-विदेशी, अंग्रेज़ (भारत में यह शब्द अंग्रेज़ों के लिए प्रयुक्त)
फ़िरोज़ी [स्त्री]-फ़ीरोज़े के रंग का
फ़ौलादी [वि.]-फ़ौलाद (लोहे) से बना बहुत कड़ा या मज़बूत
फ़्रिल [सं.]-झालर**बुरकना** [स.क्रि.]-चूरे जैसी किसी चीज़ को छिड़कना
बुहारी [स.क्रि.]-बुहारनेवाली चीज़, झाड़ू
बूझति [स्त्री. सं.क्रि.]-पूछती है
बेज़ार [वि.]-परेशान
बैरिस्टरी [स्त्री.]-वकालत
बघारना [स.क्रि.]-पांडित्य दिखाने के लिए किसी विषय की चर्चा करना
बदहज़मी [स्त्री.]-अपच, अजीर्ण
बिलोचन [पु.]-नेत्र
बुंदेले हरबोलों [पु.]-बुंदेलखंड की एक जाति विशेष, जो राजा-महाराजाओं के यश गाती थी
भूभुरि [स्त्री.]-गरम रेत, गरम धूल
भृकुटी [स्त्री.]-भौंहें
भेड़ लेना [स.क्रि.]-भिड़ा देना, सटा देना, बंद करना
मंशा [पु.]- इरादा
मग [सं.पु.]-रास्ता
मनुज [पु.]-मनुष्य
मरज (मर्ज़) [पु.]-बीमारी
मुदित [वि.]-मोदयुक्त, आनंदित
मुमकिन [वि.अ.]-संभव
यान [पु.]-वाहन
लरिका [पु.]-लड़का
लैम्प [पु.]-चिराग
लोच [स्त्री.]-लचीलापन, लचक
वात [पु.]-शरीर में रहने वाली वायु के बढ़ने से होनेवाला रोग
वारि [पु.]-जल
विकट [वि.]-भयंकर, दुर्गम, कठिन
विजन [वि.]-निर्जन या एकांत जगह
विरुदावली [वि.]-विस्तृत कीर्ति-गाथा, बड़ाई
व्यूह रचना [स्त्री.]-समूह, युद्ध में सुदृढ़ रक्षा-पंक्ति बनाने के उद्देश्य से सैनिकों का किसी विशेष क्रम में खड़ा होना
शख्सियत [स्त्री.]-व्यक्तित्व
शिफ़्ट [स.क्रि.]-पारी
शिविर [पु.]-रहने या आराम करने के लिए तंबू गाड़कर अस्थायी रूप से बनाई गई जगह
समाँ [पु.]-वातावरण, माहौल, समय
सहल [वि.]-आसान
सॉक्स [सं.]-मोज़ा, जुराब
साँकल [स्त्री.]-दरवाज़ा बंद करने के लिए लगाई जाने वाली लोहे की कड़ी
सिम्त [स्त्री.]-दिशा
सिरजती [स्त्री.]-बनाती, सृजन करती
सिलसिला [वि.]-क्रम
सीरत [स्त्री.]-गुण
सीस [पु.]-शीश, सिर
सुभट [पु.]-रणकुशल, योद्धा
स्टॉक [सं.]-संग्रह, भंडार
स्टॉकिंग [स्त्री.]-लंबी जुराब
हाज़मा [वि.]-पाचन-शक्ति
हिकमत [वि.स्त्री.]-युक्ति, उपाय
हिफ़ाज़त [वि.स्त्री.]-रक्षा
हेकड़ी [वि.स्त्री.]-घमंड
हेय [वि.]-हीन, तुच्छ

© SCERT not to be republished